CHAPTER 50

SANSKRIT

Doctoral Theses

01. अनिरुद्ध
निघण्टुकोष के पर्यायवाची नाम-पदों में अर्थभिन्नता (द्वितीय अध्याय के सन्दर्भ में)।
निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोड़ा
Th 25095

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। शोध-प्रबन्ध के प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका के अन्तर्गत निघण्टुकोष के विषय में विस्तृत परिचय देने का प्रयास किया गया है। शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में कर्मवाचक अपः, अप्नः, दंसादि 26 नामपदों के अर्थ का विचार विद्वानों द्वारा किये गए निर्वचन, ब्राह्मण-ग्रन्थ एवं वैदिक साहित्य में प्राप्त इन पदों के अर्थ एवं ऋग्वेद की ऋचाओं के सन्दर्भ के साथ किया गया है। इन नामपदों में कुछ ऐसे भी नामपद हैं जैसे चक्रत्, करन्ती आदि पद कर्मवाचक अर्थ में नहीं प्राप्त होते हैं। द्वितीय अध्याय में अपत्यवाचक तुक्, तोकम्, तनयादि 15 नामपदों एवं मनुष्यवाचक मनुष्याः, नरः, धवादि 25 नामपदों को अर्थचिन्तन के लिए प्रस्तुत कर व्याकरण, वैदिक साहित्य एवं कोषादि के प्रमाणों को उद्धृत किया गया है। तृतीय अध्याय के अन्तर्गत बाहुवाचक आयती, च्यवाना, अभीशू आदि 12 नामपदों एवं अंगुलिवाचक अग्रुवः, अण्व्यः, विशादि 22 नामपदों के अर्थ चिन्तन में निर्वचनों, व्याकरणिक टिप्पणियों तथा कोषग्रन्थ एवं वैदिक प्रयोगों को उद्धृत कर विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अन्न के पर्याय के रूप में संगृहीत अन्धः, वाजः, पयादि 28 नामपदों के अर्थ का विचार किया गया है। पंचम अध्याय में बल के लिए प्रयुक्त ओजः, वाजः, पाजादि 28 नामपदों के अर्थ का चिन्तन किया गया है, जिसमें अनेक प्रकार के बलों का जैसे-प्रजाबल, सेनाबल, धनबल आदि का उल्लेख है। षष्ठ अध्याय में धन के पर्याय माने गए मघम्, रेक्णः, रिक्थादि 28 नामपद एवं गो के पर्याय के रूप में संगृहीत अघ्न्या, उस्रा, उस्रिया आदि 9 नामपदों के अर्थ पर विचार कर उन्हें स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। वेदार्थ-ज्ञान के लिए निघण्टुकोष की महत्ता को देखते हुए इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह शोध-प्रबन्ध विद्वत्समाज एवं शोधार्थियों के साथ-साथ समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

विषय सूची

1. कर्मवाचक नामपदों का विश्लेषण 2. अपत्यवाचक नामपदों एवं मनुष्यवाचक नामपदों का अर्थ विश्लेषण 3. अंगवाचक नामपदों का अर्थ विश्लेषण 4. अन्नवाचक नामपदों का अर्थ विश्लेषण 5. बलवाचक नामपदों का अर्थ विश्लेषण 6. धनवाचक नामपदों का अर्थ विश्लेषण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

02. आर्य (कृष्ण)
नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में व्याकरण का अनुप्रयोग (अष्टम सर्ग पर्यन्त)
निर्देशिका : डॉ. करुणा आर्या
Th 25097

सारांश
(असत्यापित)

नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में श्रीहर्ष-प्रयुक्त पदों पर की गई व्याकरणिक टिप्पणियों को आधार बनाकर प्रस्तुत शोधप्रबन्ध लिखा गया है। उभय टीकाकारों द्वारा व्याकरण-प्रक्रिया के अनुसार साधनिका को दर्शाते हुए श्रीहर्ष-प्रयुक्त पदों का दिव्य-भव्य अर्थ अभिव्यक्त किया गया है। काशिका, सिद्धान्तकौमुदी, भाष्य आदि व्याकरण के आकरग्रन्थों के आलोक में दोनों टीकाओं के व्याकरणिक अनुप्रयोगों का साम्य और वैषम्य के आधार पर विवेचन करना इस प्रबन्ध का अभिधेय है। शोधप्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में श्रीहर्षप्रयुक्त कृदन्त पदों पर उभय टीकाकारों द्वारा की गई व्याकरणिक टिप्पणियों का अनुशीलन किया गया है। इस अध्याय में दो प्रकरण है- पूर्वकृदन्त और उत्तरकृदन्त। द्वितीय अध्याय में उभय टीकाओं में निर्दिष्ट तद्धितान्त पदों की व्याकरणिक टिप्पणियों की समीक्षा की गई है। इस अध्याय को अपत्यार्थक आदि 14 प्रकरणों में विभाजित किया गया है। तृतीय अध्याय में श्रीहर्ष द्वारा प्रयुक्तपदों पर उभय टीकाकारों द्वारा की गई व्याकरणात्मक टिप्पणियों की समीक्षा केवलसमास, अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व इन पाँच प्रकरणों के अन्तर्गत की गई है। चतुर्थ अध्याय में उभय टीकाओं के अन्तर्गत श्रीहर्षप्रयुक्त तिङन्त पदों पर की गई व्याकरणिक टिप्पणियों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में श्रीहर्ष प्रयुक्त लट् आदि सभी लकारों के रूपों का परिगणन किया गया है। पंचम अध्याय के अन्तर्गत उभय टीकाओं में व्याकरणात्मक टिप्पणी पूर्वक निर्दिष्ट स्त्रीप्रत्ययान्त विभक्त्यर्थ तथा सन्धि आदि का अनुशीलन किया गया है। इस अध्याय के अन्त में 'शेष' नाम से एक प्रकरण रखा गया है जिसके अन्तर्गत षत्व, णत्व, लिङ्गवचन-निर्देश, एकशेष, नामपदद्विरुक्ति आदि स्थलों का संकलन कर उनकी समीक्षा की गई है। अन्त में उपसंहार शीर्षक के अन्तर्गत निष्कर्ष में उभय टीकाओं में प्राप्त साम्य और वैषम्य को दर्शाया गया है।

विषय सूची

1. नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में कृदन्त–अनुप्रयोग 2. नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में तद्धितान्त–अनुप्रयाग 3. नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में समास–अनुप्रयोग 4. नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में तिङन्त–अनुप्रयोग 5. नैषधीयचरितम् की जीवातु और नारायणी टीकाओं में स्त्रीप्रत्ययान्त विभक्त्यर्थ एवं सन्धि आदि का अनुप्रयोग। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

03. आर्य (निखिल)
आचार्य विश्वेश्वरकृत व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का समीक्षात्मक अध्ययन : पदाधिकार के विशेष परिप्रेक्ष्य में ।
निर्देशक : डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य
Th 25087

विषय सूची

1. अष्टाध्यायी में पदाधिकार का स्वरूप एवं विषय 2. पदाधिकार में स्वर-व्यवस्था-व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का विमर्श 3. पदाधिकारगत असिद्ध-व्यवस्था- व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का विमर्श 4. पदाधिकार में षत्वव्यवस्था-व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का विमर्श 5. पदाधिकार में णत्वव्यवस्था-व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का विमर्श 6. पदाधिकार में अन्य विभिन्न आदेश-व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि का विमर्श 7. पदाधिकार के संबंध में व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि के अवदान का मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

04. आर्या (कल्पना)
रूपावतार की नीवी व्याख्या का सम्पादन एवं अध्ययन (संज्ञा-संहिता-विभक्ति-अव्यय-स्त्रीप्रत्ययावतार के सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य
Th 25084

विषय सूची

1. संज्ञावतार एवं संहितावतार 2. विभक्त्यवतार 3. विभक्त्यन्तर्गतहलन्तप्रकरण 4. अव्ययावतार 5. स्त्रीप्रत्ययावतार। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

05. आर्या (मीनाक्षी कुमारी)
श्रीगुरूमहाराजचरितम् का काव्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सरिता शर्मा
Th 25090

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध का विषय 'श्रीगुरुमहाराजचरितम्' महाकाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन है। यह एक चरित काव्य है जो कि वर्ष 2015 में प्रकाशित हुआ था। इस महाकाव्य के काव्यशास्त्रीय पक्षत्र्ः यथा–रस, ध्वनि, अलघङ्कार, छन्द, औचित्य, रीति,वक्रोक्ति, गुण व दोष इत्यादि का समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध्कार्य में किया गया है। साहित्यदर्पणकार के अनुसार शृधैंार, वीर व शान्तरस महाकाव्य में अंधैंरस होते हैं। इस लक्षण के आधर पर 'श्रीगुरुमहाराजचरितम्' महाकाव्य का अधैंरस शान्तरस है। गीता में योगिराज श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश शान्तरस का उत्तम कोटि का उदाहरण है। भारतीय संस्कृति में गुरु–शिष्य परम्परा के अनेकों उदात्त उदाहरण इतिहास में संरक्षित है। यहां तक कि शास्त्राकारों ने द्विजातियों के दो प्रकार के वंश की बात कही है एक जन्म के आधर पर और एक विद्या के आधर पर इससे शिष्य और पुत्रा के सम्बन्ध् का ऐक्य अभिप्रेत है, अर्थात् पिता पुत्रा के संबंध् के समान ही गुरु–शिष्य का भी संबंध् अत्यंत पवित्रा एवं महत्वपूर्ण स्वीकार किया गया है। भारतीय संस्कृति की इसी परम्परा के प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु आधुनिक काल में भी महाकवि हरिनारायण दीक्षित जी द्वारा 'श्रीगुरुमहाराजचरितम्' नामक महाकाव्य का प्रणयन किया गया। प्रस्तुत शोध् प्रबंध् में इसी महाकाव्य में अनुस्यूत काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का अध्ययन षट् संप्रदायों के आलोक में किया गया

विषय सूची

1. भूमिका 2. श्रीगुरूमहाराजाचरितम् की महाकाव्य के रूप में समीक्षा 3. श्रीगुरूमहाराजाचरितम् में वर्णित : रस एवं ध्वनि 4. श्रीगुरूमहाराजाचरितम् में अलंकार व छन्द सिद्धान्त 5. श्रीगुरूमहाराजाचरितम् में औचित्य व रीति सिद्धान्त 6. श्रीगुरूमहाराजाचरितम् में वक्रोक्ति सिद्धान्त 7. प्रकृत महाकाव्य पर प्राचीन कवियों का प्रभाव एवं उपादेयता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

06. उपमा

रामायणमूलक भासकृत रूपकों की काव्यशास्त्रीय समीक्षा (छ प्रस्थानों के आधार पर)।

निर्देशक : डॉ. विजय गर्ग

<u>Th 25609</u>

सारांश

(असत्यापित)

रूपकों का उद्भव वैदिक काल में हुआ और इनका विकास इतिहास काल में हुआ। यहाँ इतिहास से आशय रामायण एवं महाभारत दोनों से है। रामायण एवं महाभारत को आधार बनाकर महाकवि भास ने रूपकों की रचना की। रामायणमूलक भासकृत रूपकों की काव्यशास्त्रीय समीक्षा (छह प्रस्थानों के आधार पर) को आधार बनाकर शोध-प्रबन्ध लिखा गया है। शोध-प्रबन्ध का प्रारम्भिक भाग विषय प्रवेश है जिसमें महाकवि भास का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, उनकी नाट्यकृतियों का वर्गीकरण एवं काव्यशास्त्र के छह प्रस्थान का सामान्य परिचय है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छह अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय 'रामायणमूलक भासकृत रूपकों का रस-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन' है जिसमें रस के घटक तत्त्व, रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार एवं अभिषेक एवं प्रतिमानाटकम् के श्लोकों में रसों का निरूपण किया गया है। द्वितीय अध्याय 'रामायणमूलक भासकृत रूपकों का अलङ्कार-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन' है, जिसमें शब्दालङ्लकार एवं अर्थालङ्कार के उदाहरण भासकृत रामाश्रित रूपकों से प्रस्तुत किये गये हैं। तृतीय अध्याय 'रामायणमूलक भासकृत रूपकों का रीतिपरक अध्ययन' है जिसमें वैदर्भी, गौडी और पाञ्चाली रीतियों को अभिषेक एवं प्रतिमानाटकम् के उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'रामायणमूलक भासकृत रूपकों का ध्वनि-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन' है, जिसमें ध्वनि के लक्षणों के अनुसार अभिषेक एवं प्रतिमानाटकम् के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। पञ्चम अध्याय 'रामायणमूलक भासकृत रूपकों का वक्रोक्ति-सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' है, जिसमें आचार्य कुन्तक द्वारा प्रतिपादित वक्रोक्ति के भेदों को भासकृत रामाश्रित रूपकों के श्लोकों में प्रस्तुत किया गया है। षष्ठ अध्याय 'रामाणमूलक भासकृत रूपकों का औचित्य-सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' है। औचित्य सिद्धान्त के अन्तर्गत प्राप्त भेदों को अभिषेक एवं प्रतिमानाटकम् के उदाहरणों द्वारा सुस्पष्ट किया गया है। अन्त में उपसंहार है।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश 2. रामायणमूलक भासकृत रूपकों का रस-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 3 रामायणमूलक भासकृत रूपकों का अलंकार-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 4. रामायणमूलक भासकृत रूपकों का रीतिपरक अध्ययन 5. रामायणमूलक भासकृत रूपकों का ध्वनि-प्रस्थान 6. रामायणमूलक भासकृत रूपकों का वक्रोक्ति-सिद्धान्त 7. रामायणमूलक भासकृत रूपकों का औचित्य-सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन की दृष्टि से अध्ययन की दृष्टि से अध्ययन । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

07. किरण

रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी की तुलनात्मक समीक्षा।

निर्देशक : डॉ. उमाशंकर

<u>Th 25608</u>

सारांश
(असत्यापित)

मेरे (शोधच्छात्रा किरण) द्वारा शोधनिवेर्देशक डॉ. उमाशंकर जी संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं सहशोधनिर्देशक प्रो. सत्यपाल सिंह जी, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के मार्गनिर्देशन में लिखा गया 'रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी की तुलनात्मक समीक्षा' नामक अध्ययन-अध्यापन परम्परा, प्रक्रियाक्रम का उद्भव एवं विकास, रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी की स्थिति इत्यादि बिन्दुओं पर विचार करते हुए प्रथम अध्याय में रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी में परस्पर साम्य-वैषम्य, दोनों में व्याख्यात विषयों का पौर्वापर्य-क्रम एवं उनके औचित्य की समीक्षा की गई है। सदैव प्रक्रियाकौमुदी एक ही विषय पर एक ही पद्धति पर आधारित दो भिन्न लेखकों द्वारा लिखे गये दो भिन्न-भिन्न प्रक्रियाग्रन्थ हैं, जिनमें पाणिनीय-मत का अनुगमन कर पाणिनीय-व्याकरणिक सूत्रों की व्याख्या की गई है। दोनों ग्रन्थों की आयोजना प्रायशः समान ही है। दोनों ग्रन्थों के पूर्वार्द्ध भाग में सुप्सम्बन्धी प्रक्रियाओं का वर्णन है तथा उत्तरार्द्ध में तिङ्सम्बन्धी प्रक्रियाओं का। विषय प्रस्तुतीकरण में कहीं रूपावतारकार अधिक सफल दिखाई देते हैं तो कहीं प्रक्रियाकौमुदीकार। यद्यपि रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी एक ही विषय पर एक ही पद्धति पर आधारित ग्रन्थ हैं तथापि लेखक भेद, कालभेद एवं दृष्टिभेद के कारण इनमें साम्य के साथ-साथ पर्याप्त वैषम्य भी दृष्टिगोचर होता है। आचार्य धर्मकीर्ति ने उत्तरार्द्ध भाग में तिङ्सम्बन्धी प्रक्रियाओं के व्याख्यान क्रम में प्रकरणों का विभाजन लकारों के आधार पर किया है अतः आचार्य धर्मकीर्ति की शैली को लकारप्रधान शैली कहा जा सकता है जबकि आचार्य रामचन्द्र ने तिङ्सम्बन्धी प्रक्रियाओं के व्याख्यानार्थ पाणिनीय धातुपाठ पठित गणक्रमानुसार प्रकरणों का विभाजन किया है। प्रकृत शोधप्रबन्ध में ग्रन्थद्वय में उपलब्ध साम्य-वैषम्य एवं उसके औचित्य पर विचार हेतु तुलनात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है।

विषय सूची

1. रूपावतार एवं प्रक्रियाकौमुदी की संरचनागत साम्य–वैषम्य समीक्षा 2. रूपावतार के संज्ञावतार, संहितावतार तथा प्रक्रियाकौमुदी के संज्ञाप्रकरण, सन्धिप्रकरण की तुलनात्मक समीक्षा 3. रूपावतार के विभक्त्यवतार, अव्ययावतार तथा प्रक्रियाकौमुदी की स्वादिप्रक्रिया, अव्ययाप्रकरण की तुलनात्मक समीक्षा 4. रूपावतार के धातुप्रत्ययपञ्चिकास्थ तिङ्प्रत्यों तथा प्रक्रियाकौमुदी के तिङन्त एवं प्रक्रिया–प्रकरणों की तुलनात्मक समीक्षा 5. रूपावतार के धातुप्रतययपञ्चिकास्थ कृदन्तप्रकरण तथा प्रक्रियाकौमुदी के कृदन्तप्रकरण की तुलनात्मक समीक्षा 6. रूपावतार के कारकावतार तथा प्रक्रियाकौमुदी के कारकप्रकरण की तुलनात्मक समीक्षा 7. रूपावतार के समासावतार तािा प्रक्रियाकौमुदी के समासप्रकरण की तुलनात्मक समीक्षा 8. रूपावतार के तद्धितावतार, स्त्रीप्रत्यायावतार तथा प्रक्रियाकौमुदी के तद्धितप्रकरण, स्वप्रत्ययप्रकरण की तुनात्मक समीक्षा 9. रूपावतार में अनुपलब्ध प्रक्रियाकौमुदीस्थ वैदिकीप्रक्रिया का औचित्य विचार। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

08. कु. ऋतिका

पाणिनीय एवं हैम व्याकरण की रचना–प्रविधि।

निर्देशक : डॉ. सोमवीर

Th 25104

विषय सूची

1. पाणिनीय एवं हैमव्याकरण की विशिष्ट प्रविधियाँ 2. धातुपाठ 3. गणपाठ 4. उणादिपाठ 5. लिंगानुशासन 6. परिभाषा पाठ। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

09. चंचल

उत्तर-पाणिनीय संस्कृत व्याकरण परम्पराओं एवं सिद्धान्तकौमुदी की तिङन्त व्यवस्था : एक तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. ए. सुधा देवी

Th 25607

विषय सूची

1. उत्तर-पाणिनीय व्याकरण सम्प्रदाय एवं उनकी आवश्यकता 2. सिद्धान्तकौमुदी एवं उत्तर-पाणिनीय प्रक्रिया ग्रन्थ 3. उत्तर-पाणिनीय व्याकरण व सिद्धान्तकौमुदी के तिङन्त-प्रकरण में प्रतिपादित दशगणीय व्यवस्था एवं उसका विवरण 4. संस्कृत व्याकरण में प्रक्रियाओं का स्थान व प्रयोगों में प्रचलन 5. उत्तर-पाणिनीय व्याकरण व सिद्धान्तकौमुदी की तिङन्त-प्रक्रिया का तुलनात्मक दृष्टिकोण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

10. जोसी (सुनील)

उत्तरपाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. अवनीश कुमार

Th 25094

सारांश

(असत्यापित)

संस्कृत भाषा एवं इसकी व्याकरणसंरचना की एक यह भी विशेषता है कि 'नामधातुओं' के प्रयोग से अल्प शब्द भी गम्भीर अर्थों का सरलतया द्योतन करने में सक्षम हैं तथा इनसे निर्मित होने वाले ललितगद्यपद्यात्मक वाक्य अभिव्यक्ति के सौन्दर्य की शोभा को अतिशय संवर्धित भी करते हैं। महर्षि पाणिनि द्वारा विरचित अष्टाध्यायी में नामधातु विषयक मुख्यतः सात प्रत्यय - क्यच्, काम्यच्, क्यङ्, क्यष्, क्विप्, णिङ् तथा णिच् प्राप्त होते हैं। 'उत्तरपाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु - एक समीक्षात्मक अध्ययन' इस शोध-प्रबन्ध में मुख्य रूप से उत्तर-पाणिनीय द्वादश व्याकरणसम्प्रदायों में वर्णित नामधातु प्रकरण अथवा नामधातु विषयक सूत्र समीक्षा को तथा इनके साहित्यिक प्रयोगों को प्रदर्शित किया गया है। संस्कृत व्याकरण की परम्परा में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले उत्तर-पाणिनीय द्वादश व्याकरणसम्प्रदायों के शब्दानुशासन पर अनुसन्धानात्मक तथा समीक्षात्मक रूप से गवेषणा की गई है। ये द्वादश व्याकरण सम्प्रदाय इस प्रकार है- कातन्त्र व्याकरण, चान्द्र व्याकरण, जैनेन्द्र व्याकरण, शाकटायन व्याकरण, सरस्वतीकण्ठाभरणव्याकरण, श्रीसिद्धहैमशब्दानुशासन, मलयगिरि शब्दानुशासन, सारस्वत व्याकरण, मुग्धबोध व्याकरण, संक्षिप्तसार व्याकरण, सुपद्मव्याकरण तथा श्रीहरिनामामृत व्याकरण। प्रस्तुत शोध कार्य को विस्तृत भूमिका सहित कुल पाँच अध्यायों में प्रदर्शित किया गया है। प्रथम अध्याय में संस्कृत व्याकरण शास्त्र के विषय में एक संक्षिप्त और महत्त्वपूर्ण परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसमें संस्कृत व्याकरण के उद्भव एवं विकास की कालजयी यात्रा को प्रतिपादित किया गया है। द्वितीय अध्याय में पाणिनि और उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में वर्णित 'नामधातु' सूत्रों को निर्देशित किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में तिङन्त स्वरूप एवं नामधातु प्रत्ययों की तुलनात्मक समन्विति' को प्रतिपादित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु क्रियारूप एवं अर्थविवेचन' को प्रदर्शित किया गया है। पञ्चम अध्याय में 'उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु उदाहरण एवं संस्कृत साहित्य में नामधातुओं के प्रयोग को प्रदर्शित किया गया है। सभी अध्यायों के निष्कर्ष को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरण शास्र-एक परिचय 2. पाणिनि और उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु सूत्र 3. उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में तिङन्त स्वरूप एवं नामधातु प्रत्ययों की तुलनात्मक समन्विति 4. उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु क्रियारूप एवं अर्थ विवेचन 5. उत्तर-पाणिनीय व्याकरणसम्प्रदायों में नामधातु उदाहरण एवं संस्कृत साहित्य में नामधातुओं का प्रयोग ।उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

11. त्रिपाठी (महात्मा वीणापाणि)
षट्कारकप्रक्रिया का आलोचनात्मक सम्पादन एवं समीक्षण।
निर्देशक : डॉ. बलराम शुक्ल
Th 25099

सारांश
(असत्यापित)

इस शोध में कुल पाँच अध्याय हैं जिसमें प्रथम अध्याय में 'षट्कारकप्रक्रिया' का आलोचनात्मक सम्पादन किया गया है । द्वितीय एवं तृतीय अध्याय में पाठ-समीक्षा की गई है । चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय में ग्रन्थ-समीक्षा की गई है । पाठ-सम्पादन से पूर्व पाण्डुलिपियों का सङ्कलन एवं सङ्कलित पाण्डुलिपियों में से ११ पाण्डुलिपियों को वर्त्तमानकालीन देवनागरी में लिप्यन्तरण किया गया । दस प्रतियों के आधार पर सन्तुलन पत्रिका का निर्माण एवं सन्तुलन पत्रिका के आधार पर वंशवृक्ष का निर्माण किया गया है । वंशवृक्ष, निम्नतर-समीक्षा और उच्चतर-समीक्षा को आधार मान कर प्रस्तुत सम्पादन किया गया है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में वररुचि कृत 'प्रयोग-सङ्ग्रह' की कारिकाओं को आधार मानकर कारक के भेदोपभेदों की व्याख्या की गई है । कर्त्ता के पाँच भेदों का अन्तर्भाव तीन भेदों में किया जा सकता है इसी तरह कर्म के सात भेदों को पाँच में अन्तर्भूत किया जा सकता है । अधिकरण में सामीपिक अधिकरण का अन्तर्भाव भाष्यकार ने ही औपश्लेषिक में कर दिया है । ऐसा प्रतीत होता है कि कारिकागत सङ्ख्या में आबद्ध होने के कारण इन भेदों को स्वीकार किया गया है । उपपद विभक्तियों में पाणिनीय अष्टाध्यायी के समस्त सूत्रों का ग्रहण नहीं किया गया है । प्रायः प्रमुख सूत्रों का ही विवेचन किया गया है। कृद्विभक्ति-प्रकरण सङ्क्षिप्त किन्तु सारगर्भित है । इस प्रबन्ध की ग्रन्थ समीक्षा में अव्याख्यात स्थलों को पाणिनीय व्याकरण के आलोक में व्याख्यायित करने का यत्न किया गया है, साथ ही ग्रन्थ के न्यूनाधिक्य पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है । प्रौढ़ विषय का प्रायः अभाव होने से अधिक व्याख्या नहीं की गई है । विभिन्न पाण्डुलिपियों के रूप में प्राप्त विच्छिन्न ग्रन्थ को पाण्डुलिपि-विज्ञान रूपी यष्टि की सहायता से सङ्घटित स्वरूप प्रदान किया गया है । आशा है यह शोध-प्रबन्ध ग्रन्थकार के उद्देश्यों को प्रतिफलित करेगा ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. षट्कारकप्रक्रिया का आलोचनात्मक सम्पादन 3. पाठ समीक्षा (आदि से कारक-विभक्ति पर्यन्त) 4. पाठ समीक्षा (विभक्ति निर्णय से समाप्ति पर्यन्त) 5. ग्रन्थ समीक्षा (आदि से कारकविभक्ति पर्यन्त) 6. ग्रन्थ समीक्षा (विभक्तिनिर्णय से कृद्विभक्ति-प्रकरण पर्यन्त)। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

12. द्विवेदी (अश्वनी कुमार)
सिद्धान्तकौमुदी की लक्ष्मीटीका का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य
Th 25610

सारांश
(असत्यापित)

शोधप्रबंध के प्रथम अध्याय का नाम 'लक्ष्मीटीका का संज्ञाप्रकरणगत वैशिष्ट्य' है। जिसमें संज्ञाप्रकरण के प्रमुख व्याख्यात्मक सूत्रों के अनसुलझें स्थलों पर लक्ष्मीटीका के स्वतंत्र मत का प्रतिपादन एवं उसके वशिष्ट्य को दर्शाया गया है। पञ्चसन्धि पर उपलब्ध अन्य टीकाओं के साथ लक्ष्मीटीका की तुलना एवं उसका वैशिष्ट्य' नामक शोधप्रबंध का यह द्वितीय अध्याय है। जिसमें 'पञ्चसन्धिप्रकरण' के प्रमुख सूत्रों के विवादास्पद स्थलों पर यथावसर बालमनोरमा, तत्वबोधिनी, प्रौढमनोरमा और शेखर आदि के वैमत्य को दिखाते हुए लक्ष्मीकार के मत का प्रतिपादन किया गया है। षड्लिंग के अजन्तपुंल्लिंग में अधिक व्याख्यात्मक सूत्र होने से इस अध्याय में मात्र एक ही प्रकरण को लिया गया है। जिसको अजन्तपुंल्लिंग में लक्ष्मीटीका की मौलिक उद्भावना' के नाम से प्रस्तुत किया गया है। अजन्तस्त्रीलिंग से हलन्तनपुंसकल्लिंग तक लक्ष्मीटीका का वैशिष्ट्य' नामक शोधप्रबंध का चतुर्थ अध्याय है। अजन्तस्त्रीलिंग एवं अजन्तनपुंसकल्लिंग के साथ हलन्त के तीनों प्रकरणों के प्रमुख स्थलों का समावेश किया गया है। इस अध्याय में अव्ययप्रकरण एवं स्त्रीप्रत्ययप्रकरण के ऐसे स्थलों को चयनित किया गया है। जिन पर आचार्यों के बीच मतभेद है। इसका नाम 'अव्यय एवं स्त्रीप्रकरणस्थ लक्ष्मीटीका का अन्य टीकाओं के साथ समीक्षात्मक अध्ययन' है। जैसा कि 'चिरम्' अव्यय में मान्त विषयक शेखरकार और लक्ष्मीकार के मत की समीक्षा की गई है। इसका नाम 'कारकप्रकरणगत लक्ष्मीटीका का विश्लेषण एवं वैशिष्ट्य' है। इसमें मात्र कारकप्रकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें लक्ष्मीकार द्वारा नव्यन्याय शैली में यत्र तत्र वस्तुस्थिति को समझाने के लिए शाब्दबोध प्रक्रिया उद्धृत की गई है, उसको भी यथासंभव दर्शाने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. लक्ष्मीटीका का संज्ञाप्रकरणगत वैशिष्ट्य 2. पञ्चसन्धि पर उपलब्ध अन्य टीकाओं के साथ लक्ष्मीटीका की तलना एवं उसका वैशिष्ट्य 3. अजन्तपंल्लिङ्ग में लक्ष्मीटीका की मौलिक उद्भावना 4. अजन्तस्त्रील्लिङ्ग से हलन्तनपुंसकल्लिङ्ग तक लक्ष्मीटीका का वैशिष्ट्य 5. अव्यय एवं स्त्रीप्रत्ययप्रकरणस्थ लक्ष्मीटीका का अन्यटीकाओं के साथ समीक्षात्मक अध्ययन 6. कारकप्रकरणगत लक्ष्मीटीका का विश्लेषण एवं वैशिष्ट्य । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

13. दिनेश कुमार

भास के बृहत्कथामूलक नाटकों की ध्वनिशास्त्रीय समीक्षा (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम के सन्दर्भ में) ।

निर्देशिका : डॉ. सरस्वती

Th 25100

सारांश

(असत्यापित)

भूमिका-भाग में सर्वप्रथम भास के व्यक्तित्व से सम्बन्धित उनके इष्टदेव, भाग्यवादी एवं पुरुषार्थी, प्रकृति-प्रेमी, त्यागी और शास्त्र-ज्ञाता होने का पता चलता है। भास के रूपकों से प्राप्त होने वाले बद्रीनाथ, उज्जयिनी और मगध के समीपवर्ती क्षेत्रों के आकार पर भास के जन्म-स्थान के विषय में जानने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात् अन्तःसाक्ष्यों और बाह्यसाक्ष्यों के आधार पर भास के काल को जानने का प्रयास किया गया है। भूमिका भाग के इसी बिन्दु में भास के कृतित्व, रूपकों की संख्या तथा पौवापर्य पर विचार किया गया है। भूमिका-भाग के 'ध्वनि-सिद्धान्त' नामक द्वितीय बिन्दु में ध्वनि शब्द की निष्पत्ति, स्फोटवाद ध्वनि-लक्षण और ध्वनिवादी प्रमुखाचार्यों के ध्वनि-भेदों को प्रदर्शित किया गया है। भूमिका-भाग के अन्त में आनन्दवर्धन द्वारा संभावित ध्वनि-विरोधी मत एवं उनका निराकरण किया गया है। प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम अविवक्षतिवाच्यध्वनि के अन्तर्गत अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि और अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि का लक्षण किया गया है। तत्पश्चात् भास के बृहत्कथाकथामूलक नाटकों (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम्) में अविवक्षितवाच्यध्वनि के अन्तर्गत अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि और अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि की समीक्षा की गई है। द्वितीय अध्याय में भास के बृहत्कथामूलक नाटकों में विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि के अन्तर्गत असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य (रसादिध्वनि) की समीक्षा की गई है। जिसमें पहले रस का स्वरूप, रसध्वनि की वाच्यार्थ भिन्नता प्रदर्शित करने के पश्चात् दोनों नाटकों में रस और भावध्वनि के उद्धरणों को प्रदर्शित किया गया है। प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् में धर्मवीर रस प्रधान रस है। अद्भुत रस और हास्यरस इस नाटक में अंग रूप में है। स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में विप्रलम्भ शृंगाररस प्रधान रस है। हास्य, करुण और वीररस इस नाटक में सहायक रस के रूप में विद्यमान है। तृतीय अध्याय में सर्वप्रथम विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि का लक्षण दिया गया है। इसके पश्चात् भास के बृहत्कथामूलक (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम्) में शब्दशक्तिमूलक और अर्थशक्तिमूलकध्वनि भेदों की समीक्षा की गई है। चतुर्थ अध्याय में गुणीभूतव्यङ्ग्य का लक्षण करने के पश्चात् भास के बृहत्कथामूलक नाटकों (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम्) में गुणीभूतव्यङ्ग्य की समीक्षा की गई है।

विषय सूची

1. भूमिका : भास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. भास के बृहत्कथामूलक (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम) नाटकों में अविवक्षितवाच्यध्वनि 3. भास के बृहत्कथामूलक (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम) नाटकों में विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य 4. भास के बृहत्कथामूलक (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम) नाटकों में विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य 5. भास के बृहत्कथामूलक (प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् एवं स्वप्नवासवदत्तम) नाटकों में गुणीभूतव्यङ्ग्य विमर्श। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

14. देवली (प्रेम बल्लभ)
वेद भाष्यकारों की परम्परा में महर्षि अरविन्द का वैशिष्ट्य।
निर्देशक : डॉ. रणजित बेहेरा
Th 25101

सारांश
(सत्यापित)

शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में हमनें वेद भाष्य की समृद्ध तथा विशाल परम्परा का आलोडन किया है। उल्लेखनीय है कि विविध व्याख्यानों के प्रणयन में ब्राह्मण ग्रन्थों तथा निरुक्त शास्त्र की विशिष्ट भूमिका रही है, जिसका उल्लेख उक्त अध्याय में किया गया है। द्वितीय अध्याय में श्रीअरविन्द की वेद से सम्बन्धित क्या मनोवैज्ञानिक तथा भाषा वैज्ञानिक दृष्टि रही है? वैदिकचिन्तन के विषय में प्रस्तुत कि जाने वाली भ्रान्तियों के विषय में श्रीअरविन्द का क्या मत है? तथा श्रीअरविन्द की दृष्टि से वैदिक रूपकों और प्रतीकों का क्या वैशिष्ट्य है? एवं पाश्चात्य चिन्तन धारा पर वैदिक चिन्तन का क्या प्रभाव रहा है? सरलतया उसे भी प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में, हमने विभिन्न व्याख्याकारों की पद्धति के अध्ययन हेतु 'अग्नि' देवता सम्बन्धी (ऋ- 1-77) एक सूक्त का चयन किया है। जिसमें हमनें विभिन्न व्याख्याकारों के मन्तव्यों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है तथा श्रीअरविन्द की अग्नि से सम्बन्धित क्या दृष्टि रही? उसे भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। चतुर्थ अध्याय में हमनें अन्तरिक्ष स्थानीय देवता 'इन्द्र', जिसका ऋग्वेद में अत्यन्त प्रधान तथा प्रसिद्ध देवता के रूप में वर्णन प्राप्त होता है, उसके एक प्रतिनिधि सूक्त में (ऋ- 1-4) विभिन्न भाष्यकारों की दृष्टि तथा श्रीअरविन्द के चिन्तन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पंचम अध्याय में हमने द्युस्थान के प्रतिनिधि देवता के रूप में सविता के एक प्रतिनिधि सूक्त (ऋ- 5-82) का चयन किया है। इस सूक्त में भी हमनें सभी आचार्यों के मन्तव्यों को पिछले अध्यायों की भाँती प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। षष्ठ अध्याय में हमनें एक विषय और सम्मिलित किया है, यद्यपि पूर्व के अध्यायों से विभिन्न मतों तथा श्रीअरविन्द की दृष्टि का स्पष्टीकरण प्राप्त हो जाता है। तथापि वे विभिन्न देवों तथा वैदिक तत्त्वों के प्रति क्या प्रतीकात्मकता प्रस्तुत करते हैं? उसे यहाँ स्पष्ट करने का हमारा प्रयत्न रहा है।

विषय सूची

1. विषय–प्रवेश : महर्षि अरविन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. वेद व्याख्यान परम्परा 3. श्रीअरविन्द का वैदिक चिन्तन 4. अग्नि–परक मन्त्रों की व्यख्या परम्परा और श्रीअरविन्द का भाष्य 5. इन्द्र–परक मन्त्रों की व्यख्या परम्परा और श्रीअरविन्द का भाष्य 6. सविता–परक मन्त्रों की व्यख्या परम्परा और श्रीअरविन्द का भाष्य 7. वैदिक तत्त्वों की प्रतीकात्मकता और श्रीअरविन्द की दृष्टि। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

15. प्रशान्त
नागेशभट्ट की काव्यशास्त्रीय व्याख्याओं में प्रतिबिम्बित भाषा–दर्शन।
निर्देशक : डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय
Th 25524

सारांश
(असत्यापित)

नागेशभट्ट सर्वतन्त्रस्वतन्त्र आचार्य हैं। ऐसे विचक्षण आचार्य की भाषादर्शन-विषयक दृष्टि को अध्येतव्य बनाकर प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का शीर्षक है- 'नागेशभट्ट की काव्यशास्त्रीय व्याख्याओं में प्रतिबिम्बित भाषा-दर्शन।' यद्यपि

प्रस्तुत प्रबन्ध में नागेशभट्टकृत समस्त व्याख्यान-ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित भाषा-दर्शन को विमर्शपूर्वक सामने लाना सङ्कल्पित था, तथापि काव्यप्रकाश पर उनके द्वारा प्रणीत उद्योत नाम्नी प्रटीका का अध्ययन करते करते अवगत हुआ कि उनकी इसी कृति में अध्येतव्य सामग्री का बाहुल्य है। इसीलिये प्रस्तुत शोधकार्य को केवल काव्यप्रदीपोद्योत पर्यन्त परिसीमित रखा गया। इस शोधकार्य को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है। सर्वप्रथम पूर्वपीठिका के अन्तर्गत नागेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि विषयों को प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अध्याय में वाचक, लाक्षणिक एवं व्यञ्जक इन त्रिविध शब्दों एवं वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यङ्ग्यार्थ इन त्रिविध अर्थों पर विमर्श करते हुए इन स्थलों पर प्रतिबिम्बित भाषा-दर्शन को प्रदर्शित किया गया है। नागेश ने शब्द के इन तीन प्रकारों को उसके औपाधिक भेद ही माना है। द्वितीय अध्याय में प्रमुख मीमांसा सिद्धान्त अभिहितान्वयवाद एवं अन्विताभिधानवाद पर नागेशकृत व्याख्यान प्रदर्शित किया गया है। वाक्यार्थविषयक मीमांसा सिद्धान्तों में व्यङ्ग्यार्थ की अनपलपनीयता, अभिहितान्वयवाद एवं व्यञ्जना, अन्विताभिधानवाद एवं व्यञ्जना, शब्दाविरामवाद एवं विधेयत्व विचार सदृश बिन्दुओं पर नागेश का भाषा-दर्शन इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में अभिधा, लक्षणा एवं व्यञ्जना इन त्रिविध शब्दशक्तियों के विषय में विमर्श करते हुए नागेश द्वारा विवेचित भाषा-दर्शन से सम्बद्ध स्थलों को प्रकाशित किया गया है। नागेशकृत अभिधा लक्षण, लक्षणा विभाग का प्रयोजन, शुद्धा लक्षणा-भेदों का औचित्यपूर्ण व्यवस्थापन, व्यञ्जना शक्ति के विषय में नागेश कृत व्याख्यान प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वैयाकरण नागेश द्वारा विचारित भाषा-दर्शन के साथ अलङ्कारशास्त्री के रूप में उनके भाषा दर्शन का पुनरवलोकन किया गया है। काव्यप्रदीपोद्योत नामक व्याख्यान के प्रणयन में काव्यशास्त्रीय विषयों का पल्लवन करते हुए नागेशभट्ट की लेखनी से अनेक भाषा-दार्शनिक बिन्दु मुखर तथा अमुखर रूप में प्रतिबिम्बित हुए हैं।

विषय सूची

1. शब्द–शब्दार्थ–विमर्श 2. वाक्य–वाक्यार्थ–विमर्श 3. शब्दार्थसम्बन्ध–विमर्श 4. वैयाकरण नागेश एवं अलंकारशास्त्री नागेश (भाषामीमांसा के संदर्भ में) । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

16. प्रीति

रूपावतार की नीवी–व्याख्या का सम्पादन एवं अध्ययन (तद्धित–तिङन्त–कृदन्तावतार के सन्दर्भ में)।

निर्देशिका : डॉ. अंजू सेठ

Th 25091

विषय सूची

1. विषय प्रवेश 2. रूपावतार की नीवी–व्याख्या : प्रतिपाद्य विषय 3. तद्धितावतार का सम्पादन एवं समीक्षात्मक अध्ययन 4. तिङन्तावतार का सम्पादन एवं समीक्षात्मक अध्ययन 5. कृदन्तावतार का सम्पादन एवं समीक्षात्मक अध्ययन । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

17. प्रीति रानी

भास, कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकृतियों में वैदिक संदर्भ।

निर्देशक : प्रो. रणजित बेहेरा

Th 25092

सारांश
(सत्यापित)

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। श्रुति की दृढ़ आधारशिला के ऊपर भारतीय धर्म तथा सभ्यता को भव्य विशाल प्रासाद प्रतिष्ठित है। हिन्दु धर्म के रहन-सहन तथा धर्म-कर्म को भली प्रकार समझने के लिए वेदों का ज्ञान आवश्यक है। भारतीय धर्म में वेद की प्रबल प्रतिष्ठा है। प्रस्तुत शोध विषय अन्तर्गत भास, कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकृतियों में वैदिक संदर्भों के माध्यम से वेद की महत्त्वपूर्ण को प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तावित शोध विषय के अध्याय विभाजन के अन्तर्गत सर्वप्रथम विवेच्य कवि एवं उनकी नाट्यकृतियों का वर्णन करते हुए वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य का अन्तः सम्बन्ध दर्शाया गया है। इसके पश्चात् प्रथम अध्याय में नाटककार भास, कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकृतियों में वैदिक आख्यानों का वर्णन किया गया। भास व भवभूति के नाटकों में वैदिक आख्यान प्राप्त न होकर कालिदास की नाट्यकृतियों में से 'विक्रमोवर्शयीम्' नाटक में वैदिक आख्यान प्राप्त होता है। द्वितीय अध्याय में भास, कालिदास एवं भवभूति तीनों कवियों की नाट्यकृतियों में वैदिक ऋषियों का वर्णन किया गया है जिनमें कण्व, विश्वामित्र, व्यास, अङ्गिरा आदि वैदिक ऋषियों का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय के अन्तर्गत वैदिक देवताओं का वर्णन करते हुए चन्द्र, शिव, सूर्य, इन्द्र आदि देवताओं का दर्शन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वैदिक संस्कृति का भास, कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकृतियों में अध्ययन किया गया है। पारिवारिक जीवन, यज्ञ, संस्कार, वर्णाश्रम आदि का वर्णन किया गया है। सभी नाट्यकृतियों का अध्ययन करते हुए वेद की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार सभी अध्यायों का अध्ययन करने के पश्चात् अन्त में उपसंहार एवं संस्कृत व हिन्दी के ग्रन्थों व पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत की गई है।

विषय सूची

1. भास, कालिदास एवं भवभूति की नाट्यकृतियों में वैदिक आख्यान 2. नाट्यकृतियों में वैदिक ऋषि 3. नाट्यकृतियों में देवता तत्त्व 4. नाट्यकृतियों में वैदिक संस्कृति। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

18. बरूवा (ज्ञानश्री)
द्वैत वेदान्त परम्परा को व्यासतीर्थ का अवदान (न्यायामृत के द्वितीय अध्याय के सन्दर्भ में) ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा
<u>Th 25611</u>

सारांश
(असत्यापित)

मध्व के द्वैतवाद का वेदान्त सम्प्रदाय में विशिष्ट स्थान है | इस मत का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ था | द्वैतवादी आचार्य का मूल लक्ष्य था मायावाद का खण्डन | मध्व का समय 1199 है | मध्व के बाद उनके अनेक शिष्यों का प्रादुर्भाव हुआ उनमें से जयतीर्थ और व्यासतीर्थ प्रमुख थे | व्यासतीर्थ का समय 1460 वी शताब्दी माना जाता है | व्यासतीर्थ ने अद्वैत का खण्डन करके द्वैत की स्थापना की थी | श्री हर्ष ने 'खण्डनखण्डखाद्य '' नामक ग्रन्थ की रचना न्याय के सिद्धान्तों के खण्डन के लिए की ,तो न्याय दर्शन के आचार्य श्री हर्ष के ग्रन्थ को वितण्डा कहकर उसे निरादर की दृष्टि से देखने लगे उस प्रतिघात का उत्तर देने के लिए चित्सुखी ने 'तत्वप्रदीपिका '' नामक ग्रन्थ लिखा ,जिसमे उन्होंने भेदवाद का खण्डन किया | इस पर द्वैत वेदान्त सम्प्रदाय असन्तुष्ट हो गया और द्वैत वेदान्त के आचार्य व्यासतीर्थ ने अद्वैत के सिद्धान्तों के खण्डन के लिए न्याय शैली में न्यायामृत की रचना की | प्रस्तुत शोध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है - प्रथम अध्याय में व्यासतीर्थ का व्यक्तित्व और

कृतित्व का वर्णन किया गया है | द्वितीय अध्याय में अद्वैत द्वारा दिया गया अखन्दार्थ के सभी लक्षणों का खण्डन किया गया है | तृतीय अध्याय में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया गया है | चतुर्थ अध्याय में भेद के स्वरूप का वर्णन किया गया है |

विषय सूची

1. व्यासतीर्थ का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. अखण्डार्थ विवेचन 3. ब्रह्म का स्वरूप विवेचन 4. भेद खण्ड का विचार। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

19. BHATTACHARYYA (Udita)
Critical Study of Nyayamanjarigranthibhanga of Cakradhara (With Special Reference to the Portions up to Inference).
Supervisor: Dr. A.D. Mathur
Th25102

Abstract
(Not Verified)

The present research is a modest attempt to study the contribution of Jayantabhaṭṭa to Indian philosophy and critically evaluate the position of Cakradhara on his understanding of Jayantabhaṭṭa. Although, the present work is limited to the first two *āhṇika* of *Nyāyamañjarī* and '*Nyāyamañjarī-granthibhaṅga*', yet there is a good number of significant philosophical issues discuss in both the texts. Hence, keeping all these in the mind, a comprehensive and comparative study of the texts is done so that the present research can reveal all those relevant issues. The objectives of the research are — To discuss the comprehensive and elaborate general definition of *pramāṇa* propounded by Jayantabhaṭṭa. To examine the idea of *pramāṇa* of other systems of Indian philosophy, i.e., Buddhists, Mīmāṁsakas and Sāṅkhya. To discuss the number of *pramāṇas* propounded by Nyāya, Buddhists and Cārvākas. To expound the theory of *pramāṇa-saṁplava.* To examine the other means of knowledge (viz., *arthāpatti, anupalabdhi, saṁbhava* and *Aitihya*) which are not accepted by Nyāya. To analyze the definition of *pratyakṣa pramāṇa* of Nyāya given by *sūtrakāra* To examine the definitions of *pratyakṣa* of other schools of opponent teams, i.e., Buddhists, Mīmāṁsakas, Sāṅkhya, Veiśeṣika. To expound the issue whether the object of *pratyakṣa* can be the object of *śabda.* To highlight the Gautama's definition of *anumāna pramāṇa* and its ingredients- *hetu, pakṣa, vyāpti* To analyze the validity of *anumāna* as an independent *pramāṇa.* To examine the status of *kriyā* and *śakti*- whether they are perceptible or inferable. To highlight the object of *anumāna.* To feature the contribution of Jayantabhaṭṭa in the rebuttal of opponents. To highlight and justify the contribution of Cakradhara as a commentator of Jayanta's encyclopaedic fame-built text *Nyāyamañjarī.* Thus, the present research is accomplished on highlighting these issues.

Contents

1. Introduction 2. Pramany-pariksa 3. Number of pramana 4. An Examination of Pratyaksa pramana 5. Anumana and its ingredients 6. Anumana : As a valid source of knowledge. Conclusion. Bibligraphy.

20. भूपेन्द्र
आचार्य विश्वेश्वरसूरिकृत व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि में कृत्प्रत्यय विमर्श।
निर्देशक : प्रो. सत्यपाल सिंह
Th 25093

सारांश
(असत्यापित)

आचार्य विश्वेश्वर ने जो वैयाकरणसिद्धान्तसुधानिधि में गहन चिन्तन किया है, वह नितान्त उपादेय है। व्याकरण के जिज्ञासुओं के लिए यह इसीलिए भी पठनीय है क्योंकि यहाँ प्राचीन व अर्वाचीन दोनों व्याकरणों का अनुपम संयोग दृग्गोचर होता है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि पतञ्जलिकृत महाभाष्य व्याकरण शास्त्र की एक कुञ्जी है। इसमें सूत्रों पर जो तर्क-वितर्क कर सिद्धान्त उपस्थापित किया गया है, वह सभी पश्चाद्वर्ती वैयाकरणों के लिए पथप्रदर्शक है। आचार्य विश्वेश्वर ने अन्तिम प्रमाण के रूप में महाभाष्य को स्वीकृत किया है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य विश्वेश्वर व्याकरण की प्राचीन परम्परा के समर्थक हैं। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में कृत्प्रत्ययों पर विस्तार से चर्चा की गयी है। शोध-प्रबन्ध के शोधसार को संक्षेप में समझने के लिए इसको दो भागों में विभक्त किया गया है। इन दोनों भागों को निश्चित रूप से इस शोध-प्रबन्ध की आत्मा कहा जा सकता है- कृत्प्रत्ययों का विभिन्न अर्थों में प्रयोग। कृत्प्रत्ययों के सन्दर्भ में व्याकरणसिद्धन्तसुधानिधिकार का मत मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च सूत्र से मति, बुद्धि और पूजा अर्थ वाली धातुओं से वर्तमानकाल अर्थ में क्त प्रत्यय दिखाई देता है। राज्ञां मतः पुजितः बुद्धः वा। परन्तु आचार्य विश्वेश्वर के मत में क्वचित् बुद्ध्यर्थक धातुओं से भूतकाल में भी क्त प्रत्यय का प्रयोग दिखायी देता है। इस शोध-प्रबन्ध से कृदन्त के विषय में आचार्य विश्वेश्वर की सूक्ष्म दृष्टि का बोध तो होता ही है साथ ही यह शोध-प्रबन्ध कृदन्त प्रकरण को विस्तार से समझने में अत्यन्त उपयोगी भी है। इस प्रकार आचार्य विश्वेश्वरसूरि ने हमारे समक्ष नवीन कल्पना प्रस्तुत करके पाणिनीय सूत्रों के रहस्य को समझने-समझाने का एक नया मार्ग प्रशस्त किया है।

विषय सूची

1. भूमिका : पाणिनीयव्याकरण की व्याख्या परम्परा एवं आचार्यविश्वेश्वरसूरिकृत व्याकरणसिद्धान्तसुधनिधि का ऐतिहासिक परिचय 2. कृत्य प्रकरण 3. पूर्वकृदन्त प्रकरण 4. उणादि प्रकरण 5. उत्तरकृदन्त प्रकरण–1 6. उत्तरकृदन्त प्रकरण–2 । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

21. मन्जीत कुमारी
वैष्णव–वेदान्त में प्रतिपादित सृष्टि–मीमांसा : एक पर्यालोचन (वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों के आलोक में)
निर्देशक : डॉ. विजयशंकर द्विवेदी
Th 25085

सारांश
(असत्यापित)

इस सृ िट के रहस्यों तथा जीवन की समस्याओं पर मनु'य अपने जागरण की प्रथम अवस्था से लेकर अब तक सुदीर्घ अनुभव तथा गहन चिन्तन के बाद जिन नि'क'ोर् को संजोने का यत्न करता चला जा रहा है, उसे भारतीय परंपरा दर्जन 'ाब्द से अभिहित करती है। संस्कृत का यह 'दर्जन' पद 'दृज' धा ातु से 'करण' अर्थ में 'ल्युट्' प्रत्यय का प्रयोग करने पर सिद्ध होता है। 'दृज्यतेऽनेनेति दर्जनम्' अथवा 'दृज्यते यत् तद् दर्जनम्' इस प्रकार दर्जन 'ाब्द की व्युत्पत्ति की जाती है। जिसके द्वारा देखा जाए अर्थात् जिसके द्वारा जीवन व जीवन विकास का ज्ञान प्राप्त किया जाए, वह दर्जन है। देखने का तात्पर्य है-तात्त्विक वास्तविकता का अन्वेक्षण। डॉ॰ राधाकृ'णन का कथन है कि-'दर्जन' 'ाब्द का प्रयोग बहुत सोच-विचार के बाद उस विचार पद्धति के लिए किया गया है, जिसकी प्राप्ति तो अन्तर्दृ िट जन्य अनुभव से होती है, पर जिसकी पु िट तार्किक प्रभावों द्वारा की जाती है।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश 2. वैष्णव वेदान्त सम्प्रदायों के अनुसार जगत का कारण और प्रयोजन 3. वैष्णव वेदांत सम्मत जगत का स्वरूप 4. वैष्णव वेदान्त सम्प्रदायों के अनुसार सृष्टि प्रक्रिया 5. वैदिक-औपनिषदिक-पौराणिक-दार्शनिक सृष्टि मीमांसाओं का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

22. मालती

ब्रज के मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. दया शंकर तिवारी

Th 25086

सारांश
(असत्यापित)

वेद भारतीय साहित्य के शिरोमणि ग्रन्थ हैं, जिनके षडांगों में ज्योतिष को मूर्धन्य स्थान प्राप्त है। यह एक प्रत्यक्ष शास्त्र है। इसकी प्रमाणिकता के एकमात्र साक्षी सूर्य और चन्द्र हैं। वेद के छः अंग हैं। इन छः अंगो में से प्रधान नेत्ररूप अंग ज्योतिष को माना गया है। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में 6 अध्याय है :- प्रथम अध्यायः ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुविद्या में ज्योतिष का अर्थ, स्वरूप, ज्योतिष के प्रवर्तक, ज्योतिष का वेदांगत्व तथा भारतीय ज्योतिष के स्कन्ध का भी वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्यायः ब्रज के मन्दिरों की स्थापत्य कला एवं विकास में ब्रज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विभिन्न सम्प्रदाय तथा मन्दिर को परिभाषित करते हुए मन्दिर के संकुचित और व्यापक अर्थ को दर्शाते हुए मन्दिर की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्यायः ऐतिहासिक दृष्टि से मन्दिर विभाजन में मन्दिर निर्माण की नागर, द्रविड़, बेसर तथा मथुरा शैली, मन्दिर वास्तुपुरुष के विभिन्न शरीरावयव और मन्दिर भेदों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ, पंचम व षष्ठ अध्याय क्रमशः ब्रज के प्रारम्भिक शताब्दी से आठवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन, ब्रज के नौवी शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन तथा ब्रज के सत्रहवीं शताब्दी से इक्कीसवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन, संज्ञक है। क्योंकि स्थापत्यकला पर कालक्रम का प्रभाव पड़ता है, इसलिए कालक्रम को आधार बनाकर ब्रज के मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय विवेचन किया गया है। अंत में उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ब्रज के मन्दिरों में उत्कृष्ट वास्तुकला और स्थापत्यकला के दर्शन होते हैं। शोधकार्य के अन्तर्गत यह ज्ञात हुआ कि अधिकतर मन्दिर वास्तुशास्त्र के अनुरूप निर्मित किये गये हैं।

विषय सूची

1. ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुविद्या 2. ब्रज के मन्दिरों की स्थापत्य कला एवं विकास 3. ऐतिहासिक दृष्टि से मन्दिर विभाजन 4. प्रारम्भिक शताब्दी से आठवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन 5. ब्रज के नवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन। 6. ब्रज के सत्रहवीं शताब्दी से इक्कसवीं शताब्दी तक के प्रमुख मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

23. MISHRA (Gautam Kumar)
Ethnographical Study of Tribes in Indic Studies.
Supervisors : Prof. Ramesh C. Bharadwaj and Prof. S.M. Patnaik
Th25098

Abstract
(Not Verified)

Considering that there exists a connection between Aryan and Tribal community, this research work intends to discover to what extent there exists a connection between the Aryans and the Tribal and the role of both of them in making a great India. First chapter highlights the role of different races like Aryans, Dravidians, Austrics, Mongoloids etc in the cultural development of India from times immemorial.Chapter two gives various information about the tribal communities mentioned in the Vedic texts. Which have been analysed and interpreted here.Third chapter analyses various information related to the tribal communities mentioned in the Epics and Puranas.Chapter four focuses on the religious practises of the Aryan and Non-Aryan tribes. Fifth chapter gives an overview in terms of Folklore and folk cult related proximity between Aryan and Tribal. incorporation of folklore and folk cult into the Aryan and Tribal fold also has been examined.

Contents

1. Introduction 2. Sanskrit culture : A composite Aryan cum non-Aryan culture 3 Tribes in vedic studies 4. Tribes in epics and puranas 5. Religious proximity between the Aryan and the Tribal 6. Folklore and Folk-Cult : Proximity among Aryan and Tribal. Conclusion and suggestions. Bibligraphy

24. मुकेश कुमार
औचित्यसिद्धान्त की दृष्टि से वामनावतरणम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. मैत्रेयी कुमारी
Th 25103

सारांश
(असत्यापित)

विषय-प्रवेश में सर्वप्रथम राजेन्द्र मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने का प्रयास किया गया है। प्रथम अध्याय में पद, वाक्य एवं प्रबन्धर्थ विषयक औचित्य की परिभाषा एवं उदाहरण देने के पश्चात् प्रस्तुत महाकाव्य में इनका अनुसन्धान किया गया है। द्वितीय अध्याय में क्रमशः गुण, अलंकार और रस औचित्य का विवेचन किया गया है जिसके अन्तर्गत क्षेमेन्द्र प्रदत्त गुण, अलंकार और रस औचित्य की परिभाषा तथा इनके औचित्य अनौचित्यगत उदाहरणों को दिखाकर 'वामनावतरणम्' महाकाव्य में गुण, अलंकार एवं रसगत औचित्य तथा अनौचित्य के उदाहरणों की समीक्षा की गई है। तृतीय अध्याय में क्रमशः गुण, अलंकार और रस औचित्य का विवेचन किया गया है जिसके अन्तर्गत क्षेमेन्द्र प्रदत्त गुण, अलंकार और रस औचित्य की परिभाषा तथा इनके औचित्य अनौचित्यगत उदाहरणों को दिखाकर 'वामनावतरणम्' महाकाव्य में गुण, अलंकार एवं रसगत औचित्य तथा अनौचित्य के उदाहरणों की समीक्षा है। चतुर्थ अध्याय में सर्वप्रथम लोक विषयक औचित्य से सम्बन्धित देश, कुल एवं व्रत सम्बन्धी औचित्य की परिभाषा देकर तदनन्तर उनके औचित्य तथा अनौचित्य के उदाहरण हैं। तत्पश्चात् 'वामनावतरणम्' में लोक विषयक औचित्य सम्बन्धी सभी भेदों की समीक्षा है। पंचम अध्याय में सर्वप्रथम कवि विषयक औचित्य जिनमें तत्त्व, सत्त्व, अभिप्राय, स्वभाव, सारसंग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम और आशीर्वचन आदि औचित्य का विवेचन है। मिश्ररचित 'वामनावतरणम्' का उपजीव्य भागवतमहापुराण का बलि वामन प्रसंग

है। यह एक पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित है इस महाकाव्य में भगवान् विष्णु वामन रूप में अवतरित होते हैं। बलि से त्रिपदा धरित्री याचना के बहाने उसका गर्वभंजन कर उसको अहंकार शून्य रहने का उपदेश देते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में 'वामनावतरणम्' महाकाव्य की समीक्षा करने पर यह पता चलता है कि इस महाकाव्य में कई स्थलों पर औचित्य का सम्यक् निर्वहन है तथा कुछ स्थलों पर अनौचित्य का भी भान होता है, जिसे प्रस्तुत प्रबन्ध में दर्शाया गया है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. वामनावतरणम् महाकाव्य में पद, वाक्य, प्रबन्धार्थ विषयक औचित्य 3. वामनावतरणम् महाकाव्य में काव्यशास्त्र विषयक औचित्य 4. वामनावतरणम् महाकाव्य में व्याकरण विषयक औचित्य 5. वामनावतरणम् महाकाव्य में लोक विषयक औचित्य 6. वामनावतरणम् महाकाव्य में कवि विषयक औचित्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

25. रीता कुमारी
कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे विरचित श्रीकृष्णचरितामृतम् का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. अजय कुमार झा
Th 25105

सारांश
(असत्यापित)

भारतीय संस्कृति और साहित्य में श्रीकृष्ण के चरित्र और व्यक्तित्त्व का विशेष महत्त्व रहा है। इस दृष्टि से नेपाल निवासी कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे कृत श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य का विशेष महत्त्व है। महाकाव्यकार ने श्रीमद्भागवत् के दशम स्कन्ध (पूर्वार्द्ध) के चैदह अध्यायों को आधार बनाकर लालित्यपूर्ण पदावली में श्रीकृष्ण के चरित्र का अनूठा चित्रण किया है। श्रीमद्भागवत् के कथानक में कवि ने यथासम्भव परिवर्तन करके विशुद्ध कृष्णचरित्रपरक महाकाव्य का प्रणयन किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। शोध प्रबन्ध के विषय प्रवेश के प्रथम भाग में संस्कृत महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय भाग में महाकाव्यकार के व्यक्तित्त्व और कर्तृत्व के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् की कथावस्तु, कथावस्तु का मूल स्रोत एवं विस्तार तथा कथावस्तु में कविकृत परिवर्तनों सर्गानुसारी कथा विकास एवं कथानक के वैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है। शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् में वर्णित चरित्रों पर शोधपरक समालोचनात्मक दृष्टि से विचार किया गया है। शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य में वर्णित प्रकृति पर शोध परक समीक्षात्मक दृष्टि से विचार करते हुए प्रकृति और काव्य के सम्बन्ध, महाकाव्य में वर्णित प्रकृति चित्रण की शैलियों, विविध रूपों एवं अन्तः सौन्दर्य को प्रस्तुत किया है। शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् में प्रतिपादित साहित्यिक तत्त्वों का उन्मेष किया है। शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य में वर्णित समाज एवं संस्कृति का शोधपरक अध्ययन किया गया है।शोध प्रबन्ध के षष्ट अध्याय में श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य का महाकाव्य निकष पर शोध परक मूल्यांकन करते हुए संस्कृत महाकाव्यों में श्रीकृष्णचरितामृतम् के स्थान को प्रस्तुत किया गया है। षष्ट अध्याय के पश्चात् शोध प्रबन्ध में शोध परक समालोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किये गये शोध अध्ययन का उपसंहार प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश 2. श्रीकृष्णचरितामृतम् की कथावस्तु 3. श्रीकृष्णचरितामृतम् का चरित्र-चित्रण 4. श्रीकृष्णचरितामृतम् में प्रकृति 5. श्रीकृष्णचरितामृतम् में साहित्यि तत्त्व 6. श्रीकृष्णचरितामृतम् में प्रतिबिम्बित समाज एवं संस्कृति 7. श्रीकृष्णचरितामृतम् का मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

26. रोहित

संस्कृत धातुपाठों में निर्दिष्ट विभिन्न शब्दार्थक धातुओं का अनुप्रयोग : एक ऐतिहासिक एवं भाषावैज्ञानिक मूल्यांकन।

निर्देशिका : डॉ. अनिता शर्मा

Th 25106

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरण में धातुपाठों की परम्परा 2. शब्द, अर्थ एवं शब्दार्थ धातुओं के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन 3. पाणिनीय धातूपाठ में शब्दार्थ धातु तथा उनका ऐतिहासिक अनुप्रयोग 4. पाणिनि-पूर्ववर्त्ती एवं उत्तरवर्ती संस्कृत धातुपाठों में शब्दार्थक धातुएँ एवं उनका ऐतिहासिक अनुप्रयोग 5. संस्कृत धातुपाठों में निर्दिष्ट विभिन्न शब्दार्थक धातुओं का अनुप्रयोग : एक ऐतिहासिक एवं भाषावैज्ञानिक मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

27. व्यास (जयेश)

वक्तिविवेक एवं काव्यप्रकाश की शब्दार्थमीमांसा का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. मीरा द्विवेदी

Th 25083

सारांश

(असत्यापित)

व्यक्तिविवेक के साथ *काव्यप्रकाश* की तुलना का यह कार्य सर्वथा नवीन है एवं इस कार्य का औचित्य यह है कि कालक्रम की दृष्टि से ध्वनिविरोधी आचार्य महिमभट्ट एवं ध्वनिवादी आचार्य मम्मट में पौर्वापर्य है, दोनों आचार्यों की काव्य-विषयक अवधारणाओं में पर्याप्त अन्तर है, साथ ही मम्मट की उपाधि, *ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य*, इस तुलना को और सार्थकता प्रदान करती है । अतः, *ध्वन्यभाव-प्रस्थापनपरमाचार्य महिमभट्ट* एवं *ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य मम्मट* की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन इस शोध की अन्वर्थता का ज्ञापक है । यह शोध-प्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. साहित्यशास्त्र में शब्दार्थमीमांसा 3. व्यक्तिविवेक में शब्दार्थमीमांसा के पक्ष 4. ध्वनि के प्रमुख भेद एवं प्रमुख उदाहरणों का अनुमान में अन्तर्भाव 5. काव्यप्रकाश में शब्दार्थमीमांसा के पक्ष 6. व्यक्तिविवेक एवं काव्यप्रकाश की तुलना एवं मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

28. वन्दना रानी

अभयचन्द्रसूरिप्रणीत प्रक्रियासंग्रह एवं वरदराजप्रणीत लघुसिद्धान्तकौमुदी का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. अंजू सेठ

Th 25525

सारांश

(असत्यापित)

संस्कृत व्याकरणशास्त्र के अध्ययन द्वारा व्याकरण की सुदीर्घ परम्परा का सम्यग्तया बोध होता है।पाणिनि से पूर्ववर्तीए पाणिनियुगीन तथा पाणिनीयेतर समस्त वैयाकरणों ने निरन्तर ही अपने.अपने व्याकरण.ग्रन्थों की रचना करते हुए भाषा के परिमार्जन में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। केवल ृकातन्त्र.व्याकरण के अतिरिक्त पणिनीयेतरव्याकरण सम्प्रदाय के व्याकरण.ग्रन्थों एवं प्रक्रिया.ग्रन्थों का उपजीव्य पाणिनि. व्याकरण ही हैए किन्तु इन पणिनीयेतरव्याकरण सम्प्रदाय का ध्येय वैदिक.स्वर व प्रक्रिया के प्रभाव से मुक्तए सरलए स्पष्ट व संक्षिप्त रूप में व्याकरण नियमों का प्रस्तुतीकरण करना थाए उदाहरणार्थ पाणिनिप्रोक्त सूत्रों को संक्षिप्तए नवीन व पदावली में परिवर्तित रूपए प्रक्रियासारल्यए लाघवप्रयोगादि के साथ प्रस्तुत करना। प्रस्तुत शोध.प्रबन्ध के अन्तर्गत अभयचन्द्रसूरिप्रणित प्रक्रियासंग्रह एवं वरदराजप्रणीत लघुसिद्धान्तकौमुदी का तुलनात्मक अध्ययन प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है। यह शोध.प्रबन्ध कुल छः अध्यायों में विभक्त है.प्रथम अध्याय में व्याकरणशास्त्र के इतिहास का सामान्य विवेचन प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय में पाणिनीयेतर व्याकरणों के उद्भव के कारणों को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में आलोच्य ग्रन्थद्वय के लेखकों अभयचन्द्रसूरि तथा वरदराज के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का विशद् परिचय प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रक्रियासंग्रह एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी के प्रतिपाद्य विषय का प्रकरणक्रमानुसार विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पञ्चम अध्याय में प्रक्रियासंग्रह एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए प्रक्रियासंग्रह की कातन्त्रए चान्द्रए जैनेन्द्रए सरस्वतीकण्ठाभरणए सिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनए मलयगिरिशब्दानुशासनए संक्षिप्तसारए मुग्धबोधए सारस्वत तथा सुपद्म.व्याकरण इन दस व्याकरण.ग्रन्थों के समस्त प्रकरणों के साथ तुलना की गई है। षष्ठ अध्याय में प्रक्रियासंग्रह एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी का परस्पर तुलनात्मकदृष्ट्या विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. व्याकरण-शास्त्र का इतिहास 2. पाणिनीयेतर व्याकरणो के उद्भव के कारण 3.आलोच्य ग्रन्थद्वय के लेखकों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 4. प्रक्रियासंग्रह तथा लघुसिद्धान्तकौमुदी का विवेचनात्मक अध्ययन 5. प्रक्रियासंग्रह की लघुसिद्धान्तकौमुदी तथा अन्य पाणिनीयेतर व्याकरणों से तुलना 6. प्रक्रियासंग्रह की लघुसिद्धान्तकौमुदी का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

29. विनीत कुमारी

पाणिनीय व्याकरण पर मीमांसा का प्रभाव

निर्देशक : प्रो. सत्यपाल सिंह

Th 25089

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-कार्य का क्षेत्र व्याकरण के तीन पक्षों, क्रमशः सूत्र-संरचना, सिद्धि-प्रक्रियारूप इतिकर्तव्यता और दार्शनिक सिद्धान्तों पर मीमांसा के साक्षात् अथवा अवान्तर प्रकार से पड़ने वाले प्रभावों का विवेचन है। इस शोधकार्य को एक वाक्य में परिभाषित करने को कहा जाए तो इसे व्याकरण और मीमांसा के अन्तःसम्बन्धों की परीक्षा कहा जा सकता है। भाष्यकार द्वारा उल्लिखित व्याकरण-अध्ययन के प्रयोजनों से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो मीमांसा को ध्यान में रखकर ही व्याकरण की रचना की गई है। ऊहः, दुष्टः शब्दः, विभक्तिं कुर्वन्ति, दशम्यां पुत्रस्य आदि सभी प्रयोजन मीमांसा के प्रायोगिक पक्ष को ध्यान में रखकर कहे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों, सूत्र-संरचना और सिद्धि-प्रक्रिया भी मीमांसा के प्रभाव से अस्पृष्ट नहीं हैं, इसे शोध-प्रबन्ध में सम्यकतया प्रतिपादित किया गया है। इसमें स्थालीपुलाक न्याय से शोध-प्रबन्ध के सभी अध्यायों में विवेचित विषयों के निष्कर्षों को साररूप में अत्यन्त संक्षेप से रखा गया है।

विषय सूची

1. भूमिका (क). सूत्र संरचना और प्रक्रिय-पक्ष पर मीमांसा का प्रभाव (प्रथम अध्याय से सप्तम अध्याय पर्यन्त)- 1. पाणिनीय व्याकरण में संज्ञाओ पर मीमांसा का प्रभाव 2. पाणिनीय व्याकरण में परिभाषा पर मीमांसा का प्रभाव 3. पाणिनीय व्याकरण में विधि सूत्रों पर मीमांसा का प्रभाव 4. पाणिनीय व्याकरण में नियम सूत्रो पर मीमांसा का प्रभाव 5. पाणिनीय व्याकरण में अतिदेश सूत्रों पर मीमांसा का प्रभाव 6. पाणिनीय व्याकरण में अधिकार सूत्रों पर मीमांसा का प्रभाव 7. पाणिनीय सूत्रों की प्रवृत्ति-विषयक बलाबल व्यवस्था पर मीमांसा का प्रभाव (ख). पाणिनीय व्यकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों पर मीमांसा का प्रभाव (अष्टम अध्याय से द्वादश अध्याय पर्यन्त)- 8. पाणिनीय व्याकरण में प्राप्त आख्यात की अवधारणा पर मीमांसा का प्रभाव 9. पाणिनीय व्याकरण में प्राप्त वाक्य की अवधारणा पर मीमांसा का प्रभाव 10. पाणिनीय व्याकरण में प्राप्त शब्द, अर्थ और शब्दार्थसम्बन्ध के नित्यत्व की अवधारणा पर मीमांसा का प्रभाव 11. पाणिनीय व्याकरण के पदार्थ विषयक सिद्धान्त पर मीमांसा का प्रभाव 12. पाणिनीय व्याकरण में प्राप्त काल की अवधारणा पर मीमांसा का प्रभाव। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

30. शिक्षा

शान्तिदेव प्रणीत प्रज्ञापारमिता एवं गौडपादकारिका : एक तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. आशुतोष दयाल माथुर

<u>Th 25096</u>

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में बौद्ध दर्शन की माध्यमिक शाखा के एक प्रमुख ग्रन्थ 'बोधिचर्यावतार' के नवम अध्याय 'प्रज्ञापारमिता' तथा अद्वैत वेदान्त के प्रारम्भिक ग्रन्थ 'गौडपादकारिका' के सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, तथा दोनों में समानताओं तथा विषमताओं का परिगणन करने का प्रयास किया गया है। शान्तिदेव प्रणीत बोधिचर्यावतार एक शून्यवाद का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसके अन्तर्गत बुद्धत्व को प्राप्त करने का मार्ग सोपान दर सोपान दस अध्यायों के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट किया गया है। इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में नवम अध्याय प्रज्ञापारमिता के अन्तर्गत ही शून्यवाद के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है, अतः केवल

इसी अध्याय को शोध का विषय बनाया गया है। प्रज्ञापारमिता पर प्रज्ञाकरमतिविरचित पञ्जिका टीका का आश्रय मूल कारिकाओं के भाव को ग्रहण करने के लिए लिया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य निम्न बिन्दुओं में व्याख्यायित किया गया है- दोनों ग्रन्थों में सत् की अवधारणा का विश्लेषण। शान्तिदेव तथा गौडपाद की प्रमेय मीमांसा का विश्लेषण। दोनों मतों में माया का स्वरूप। शान्तिदेव तथा गौडपाद के द्वारा खण्डित प्रमुख मत तथा खण्डन हेतु प्रयुक्त तर्कों का विश्लेषण। दोनों ग्रन्थों में कार्यकारणवाद के सिद्धान्त का स्वरूप। प्रज्ञापारमिता तथा गौडपादकारिका में प्रमाण की अवधारणा का विश्लेषण। शान्तिदेव तथा गौडपाद के द्वारा प्रतिपादित दर्शन में चैतन्य का स्वरूप। दोनों दर्शनों में प्रदत्त 'अजातिवाद' की तुलना। गौडपाद प्रतिपादित अमनीभाव तथा शान्तिदेव की विचारहीनता की स्थिति की तुलना। शान्तिदेव प्रतिपादित शून्य तथा गौडपाद के द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त : साम्य तथा वैषम्य। प्रस्तुत शोधकार्य में उपरोक्त बिन्दुओं के अन्तर्गत दोनों ग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, तथा अध्ययन के अनन्तर प्राप्त होने वाले निष्कर्षों को अन्य विद्वानों के मतों के द्वारा पुष्ट किया गया है। इस प्रकार यह शोधकार्य शान्तिदेव विरचित प्रज्ञापारमिता तथा गौडपादकारिका का समग्र तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर निष्कर्ष में गौडपाद पर प्रच्छन्न बौद्ध होने के आरोप का विवेचन भी प्रस्तुत करता है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. सत् का स्वरूप 3. प्रमेय मीमांसा 3. प्रमाणमीमांसा 4. चैतन्य का स्वरूप 6. शुन्य एवं अद्वैत। निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

31. सचिन कुमार
वाक्यपदीय की अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन (क्रिया समुद्देश तथा काल समुद्देश के सन्दर्भ में)।
निर्देशक : डॉ. रणजीत कुमार मिश्र
Th 25088

विषय सूची

1. संस्कृत वाङ्मय में क्रिया तथा काल 2. क्रिया विचार 3. क्रियाविमर्श 4. काल विचार 5. काल की त्रिविध शक्तियों का विवेचन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

32. हरीश कुमार
पाणिनीय अतिदेशव्यवस्था पर कैयटख शिवरामेन्द्र एवं हरदत्तमिश्र : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 25107

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. अतिदेश सूत्रों का सामान्य परिचय 3. कार्यातिदेश भाग-1 4. कार्यातिदेश भाग-2 5. कार्यातिदेश भाग-3 6. व्यपदेशातिदेश 7. शास्त्रातिदेश 8. रूपातिदेश, तादात्म्यातिदेश और निमित्तादेश। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

M. Phil. Dissertations

33. **आर्य (निखिल राज)**
    कुमारसंभव के प्रथम पांच सर्गों में प्रतिबिम्बितअद्वैततत्त्व : एक विवेचन।
    निर्देशक: डा एम किशन

34. **आकाश दीप**
    खगोलीय गणनाओं में प्राचीन यन्त्रों की भूमिका और उपयोगिता: सिद्धांतदर्पण के परिप्रेक्ष्य में।
    निर्देशक: डा उमाशंकर

35. **आशुतोष कुमार**
    साहित्यदर्पण में अनुप्रयुक्त दार्शनिक सिद्धान्त: एक अध्ययन(द्वितीय परिच्छेद के सन्दर्भ में)।
    निर्देशक: डा उमाशंकर

36. **बहुगुणा (सूर्यदेव)**
    शकुनशास्त्र एवं मानवजीवन: एक अनुशीलन।
    निर्देशक: डा राजीव रंजन

37. **चौधरी (अभय कुमार)**
    सरस्वतीकंठाभरण की विवरण टीका का समीक्षात्मक अध्ययन (चतुर्थ परिच्छेद के सन्दर्भ में)।
    निर्देशक: डा सुभाष कुमार सिंह

38. **चौरसिया (अंकित)**
    अथर्ववेद में वर्णीत खाद्य एवं पेय पदार्थो का समीक्षात्मक अध्ययन।
    निर्देशक: प्रो. रमेश भारद्वाज

39. **झा (मयूरी)**
    साहित्यदर्पण के अनुसार रूपक :एक अनुशीलन (प्रमुख टीकाओं के सन्दर्भ में)।
    निर्देशक: प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी

40. **जोशी (जितेंद्र कुमार)**
    वीरतरङ्गिणी का समीक्षात्मक अध्ययन।
    निर्देशक: प्रो. मीरा द्विवेदी

41. **मधु**
    सी० डी०देशमुखकृत गाँधीसूक्तिमुक्तावली: एक अध्ययन।
    निर्देशक: प्रो. रमेश सी. भारद्वाज

42. **मठपाल (संजय)**
लिट्लकार सम्बन्धी पाणिनिसूत्रों पर न्यास का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक: प्रो. सत्यपाल सिंह

43. **मिश्रा (ब्रह्मानन्द)**
एकशेषसूत्राणांविशिष्टम् अध्ययनम् ।
निर्देशक: डा. मोहिनी आर्या

44. **नरेंद्र कुमार**
ब्रह्मसिद्धि में आनन्दमीमांसा ।
निर्देशक: डा. अवधेश प्रताप सिंह

45. **नौटीयाल (सतीश)**
ध्वनिप्रस्थान को आचार्य आनन्द झा का योगदान(ध्वनिकल्लोलिनी के सन्दर्भ मे)।
निर्देशक: प्रो॰ मीरा द्विवेदी

46. **ऋतु**
सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसंग्रह : एक अध्ययन।
निर्देशक: डा. अवधेश प्रताप सिंह

47. **रॉय (सुमन)**
अथर्ववेदीय षष्ठकाण्ड का सांस्कृतिक अध्ययन।
निर्देशक: डा. करुणा आर्या

48. **सचिन कुमार**
उत्तर भारतीय अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन (ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी से आठवीं शताब्दी ईस्वी के संदर्भ में) ।
निर्देशक: डा. पूर्णिमा कौल

49. **सरकार (चिरंजीत)**
साहित्यदर्पण में ग्रन्थकार के स्वकृत उदाहरणात्मक श्लोकों का काव्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक: डा. टेक चंद्र मीणा

50. **संजू**
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीमें विवेचित सन्धिप्रक्रिया के लिए ससूत्रसिद्धि –तन्त्र का निर्माण ।
निर्देशक: प्रो. सत्यपाल सिंह

51. **सेनवाल (गणेश प्रसाद)**
काव्यादर्श की प्रमुख टीकाओं में समाधिगुण-विचार (रत्नश्री, हृदयङ्गमा, प्रभा, विवृति तथा सुदर्शना)।
निर्देशक: डा. भारतेन्दु पांडे

52. **शिल्पी कुमारी**
प्रबोधसुधाकर का समीक्षात्मक अध्ययन (देहनिन्दा एवं विषयनिन्दा प्रकरण के सन्दर्भ में)।
निर्देशक: डा. श्रुति रॉय

53. **शिवानी**
विश्वेश्वर पाण्डेयकृत् अलंकारमुक्तावली में उपमालंकार : एक अनुशीलन ।
निर्देशक: डा. मीरा द्विवेदी

54. **सोपान**
भाषाशास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र में रामकृष्ण गोपाल भंडारकर का योगदान ।
निर्देशक: डा. बलराम शुक्ल

55. **स्वयंप्रभा**
बिहार की सांस्कृतिक विरासत एवं अभिलेख ।
निर्देशक: प्रो. रमेश चंद्र भारद्वाज

56. **विनीता**
काव्य प्रयोजन- भारतीय एवं पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र के परिपे्रक्ष्य में।
निर्देशक: डा. रंजन कुमार त्रिपाठी

57. **सोनिया**
भर्तृहरि-कृत शतकत्रयम में धर्मशास्त्रीय तत्तव : एक अनुशीलन।
निर्देशक: डा. वेद प्रकाश डिंडोरिया

58. **सिंह (विद्या प्रकाश)**
न्याय परम्परा में छल पदार्थ।
निर्देशक: डा. दीपक कालिया

59. **शाक्य (संजय)**
न्याय विनियोग विधि में षट-प्रमाण (अर्थ संग्रह की टीकाओं के आलोक में।
निर्देशक: डा. सत्यपाल सिंह

60. **प्रेमचन्द**
कठोपनिषद में प्रत्यय - विमर्श।
निर्देशक: डा. करुणा आर्या